Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ और वर्ग चेतना का अध्ययन

डॉ. टी. सुमति
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, नरसमपेट, तेलंगाना।

सारांश

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के ऐसे युगप्रवर्तक उपन्यासकार हैं जिन्होंने साहित्य को समाज की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं तथा मानवीय संघर्षों से गहराई से जोड़ा। उनके उपन्यासों में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर किसान, मजदूर, स्त्री, दलित तथा मध्यम वर्ग के जीवन का यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ तथा वर्ग चेतना के स्वरूप का विश्लेषण करना तथा उनके साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है। अध्ययन में गोदान, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला तथा सेवासदन जैसे प्रमुख उपन्यासों का विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि प्रेमचंद ने सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव, स्त्री उत्पीड़न, जमींदारी शोषण तथा वर्गीय संघर्ष जैसी समस्याओं का अत्यन्त यथार्थ चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में वर्ग चेतना केवल शोषण के चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता, मानवीय गरिमा तथा परिवर्तन की चेतना को भी अभिव्यक्त करती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज की सामाजिक संरचना, वर्गीय संबंधों तथा मानवीय मूल्यों को समझने का एक महत्त्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में भी सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा वर्गीय विभाजन जैसी समस्याओं के संदर्भ में प्रेमचंद के विचार और उनका साहित्य समान रूप से प्रासंगिक एवं प्रेरणादायी हैं।

कुंजी शब्द: *प्रेमचंद, सामाजिक यथार्थ, वर्ग चेतना, हिन्दी उपन्यास, सामाजिक परिवर्तन, किसान जीवन, सामाजिक न्याय।*

1. प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। उन्होंने उपन्यास विधा को सामाजिक जीवन से जोड़ते हुए उसे जनसामान्य की समस्याओं और संघर्षों की अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम बनाया। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज के यथार्थ का दर्पण है, जिसमें ग्रामीण जीवन, किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, मध्यम वर्ग तथा वंचित समाज के जीवन का सजीव और यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर समाज में जागरूकता, समानता तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना का माध्यम बनाया।

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के साथ–साथ वर्ग चेतना का भी प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन, उनके पारस्परिक संबंधों, संघर्षों तथा शोषण की स्थितियों को

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया। गोदान, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला तथा सेवासदन जैसे उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव तथा मानवीय संवेदनाओं को साहित्य का केन्द्र बनाया। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त प्रासंगिक माना जाता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य प्रेमचंद के उपन्यासों में निहित सामाजिक यथार्थ तथा वर्ग चेतना का अध्ययन करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद ने भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों का चित्रण किस प्रकार किया तथा उनके साहित्य में सामाजिक परिवर्तन और मानवीय मूल्यों की स्थापना का स्वर किस रूप में व्यक्त हुआ है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में भारतीय समाज अनेक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों से गुजर रहा था। औपनिवेशिक शासन, जमींदारी व्यवस्था, महाजनी शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव तथा स्त्रियों की दयनीय स्थिति जैसी समस्याएँ समाज में व्यापक रूप से विद्यमान थीं। इन परिस्थितियों का सर्वाधिक प्रभाव किसान, मजदूर तथा निम्न आय वर्ग पर पड़ा, जिसके कारण समाज में आर्थिक और सामाजिक विषमता निरन्तर बढ़ती गई।

इसी परिवेश में प्रेमचंद ने अपने साहित्य का सृजन किया। उन्होंने समाज की वास्तविक समस्याओं को निकट से देखा और उन्हें अपने उपन्यासों का आधार बनाया। उनके उपन्यासों में केवल घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि समाज की संरचना, वर्गीय संबंधों, शोषण की प्रवृत्तियों तथा सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का गम्भीर विश्लेषण भी मिलता है। उनके पात्र अपने–अपने सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और उस वर्ग की समस्याओं, आकांक्षाओं तथा संघर्षों को अभिव्यक्त करते हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय समाज के सामाजिक इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं। इनमें किसान और जमींदार, श्रमिक और पूँजीपति, स्त्री और पुरुष, उच्च तथा निम्न वर्गों के बीच विद्यमान संबंधों का यथार्थ चित्रण मिलता है। यही कारण है कि उनके साहित्य का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में भी आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता तथा वर्गीय विभाजन विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। इस कारण प्रेमचंद के उपन्यास आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र इसी संदर्भ में प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ तथा वर्ग चेतना के स्वरूप का विश्लेषण करता है, जिससे उनके साहित्य की सामाजिक उपयोगिता तथा समकालीन महत्ता को समझा जा सके।

2. साहित्य की समीक्षा

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

गोविन्द (2020) ने अपने अध्ययन प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ एवं नैतिक संवेदनाएँ में प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ और मानवीय मूल्यों का विश्लेषण किया था। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया था कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की सामाजिक विषमता, नैतिक द्वंद्व तथा मानवीय मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया था। शोध में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया था कि प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक परिवर्तन तथा नैतिक चेतना का सशक्त माध्यम रहा था।

सिल्पा (2024) ने प्रेमचंद के उपन्यास 'प्रतिज्ञा' में सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिंब विषयक अध्ययन में यह स्पष्ट किया था कि प्रतिज्ञा उपन्यास में जातिगत भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियाँ, स्त्री की स्थिति तथा समाज–सुधार से जुड़े प्रश्नों का यथार्थवादी चित्रण किया गया था। अध्ययन में यह भी बताया गया था कि प्रेमचंद ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते हुए समाज सुधार की आवश्यकता पर विशेष बल दिया था।

वर्मा (2025) ने प्रेमचंद के उपन्यास : सामाजिक यथार्थ, शोषण तथा मानवीय मूल्यों का संकट विषयक अध्ययन में प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों का सामाजिक एवं वर्गीय दृष्टि से विश्लेषण किया था। अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया था कि प्रेमचंद ने आर्थिक शोषण, वर्गीय असमानता, किसान जीवन, सामाजिक अन्याय तथा मानवीय मूल्यों के संकट का अत्यन्त यथार्थ चित्रण किया था। अध्ययन के निष्कर्षों में यह बताया गया था कि प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक यथार्थ और वर्ग चेतना को समझने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आधार सिद्ध हुआ था।

3. प्रेमचंद का साहित्यिक व्यक्तित्व

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के उन महान साहित्यकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने साहित्य को समाज की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर उसे जनजीवन का सशक्त माध्यम बनाया। उनका साहित्य भारतीय समाज के विविध पक्षों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, जातिगत भेदभाव, स्त्री जीवन, किसान और मजदूर वर्ग की समस्याओं का गहन चित्रण मिलता है। प्रेमचंद का साहित्यिक व्यक्तित्व केवल एक उपन्यासकार तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज–सुधारक, यथार्थवादी चिंतक तथा मानवीय मूल्यों के समर्थक साहित्यकार के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। उनके साहित्य में मानवता, सामाजिक न्याय, नैतिकता तथा परिवर्तन की चेतना का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रस्तुत शीर्षक के अंतर्गत उनके जीवन, साहित्यिक दृष्टि, प्रमुख विशेषताओं तथा हिन्दी साहित्य में उनके योगदान का संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है।

3.1 जीवन परिचय

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जनपद के लमही ग्राम में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय विद्यालयों में हुई। बाल्यावस्था में ही माता–पिता के निधन तथा आर्थिक अभावों के कारण उन्हें अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इन अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व को संवेदनशील बनाया और समाज के शोषित तथा वंचित वर्गों के प्रति उनमें गहरी सहानुभूति उत्पन्न की।

उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ उर्दू भाषा से किया तथा बाद में हिन्दी में व्यापक लेखन किया। शिक्षक तथा विद्यालय निरीक्षक के रूप में कार्य करते हुए उन्हें ग्रामीण समाज और सामान्य जनजीवन को निकट से देखने का अवसर मिला। इसी अनुभव के आधार पर उन्होंने भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं को अपने उपन्यासों और कहानियों का विषय बनाया। प्रेमचंद का सम्पूर्ण साहित्य उनके जीवनानुभवों तथा सामाजिक सरोकारों का सशक्त प्रतिबिम्ब है।

3.2 साहित्यिक दृष्टि

प्रेमचंद का साहित्यिक दृष्टिकोण यथार्थवादी, मानवतावादी तथा समाजोन्मुख था। उनका विश्वास था कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज में नैतिक चेतना, सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की भावना उत्पन्न करना भी है। उन्होंने साहित्य को जनजीवन की समस्याओं को अभिव्यक्त करने का प्रभावी माध्यम माना।

उनकी रचनाओं में सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, जातिगत भेदभाव, स्त्री उत्पीड़न, ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ तथा किसान और मजदूर वर्ग के संघर्षों का अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण मिलता है। प्रेमचंद ने किसी वर्ग विशेष का पक्ष लेने के स्थान पर सम्पूर्ण समाज के संतुलित चित्रण का प्रयास किया। उनका साहित्य समानता, न्याय, मानवता और नैतिक मूल्यों की स्थापना का संदेश देता है।

3.3 प्रमुख साहित्यिक विशेषताएँ

प्रेमचंद के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिक यथार्थ का सजीव और विश्वसनीय चित्रण है। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज की वास्तविक परिस्थितियों, मानवीय संबंधों तथा जीवन–संघर्षों को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत किया। उनके पात्र सामान्य जीवन से जुड़े हुए हैं, इसलिए पाठक उनसे सहज रूप से जुड़ाव अनुभव करता है।

उनकी भाषा सरल, सहज तथा जनसामान्य की भाषा है। उन्होंने कठिन और अलंकारिक शैली के स्थान पर ऐसी भाषा का प्रयोग किया जिसे समाज का प्रत्येक वर्ग समझ सके। उनके उपन्यासों में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, निम्न वर्ग तथा मध्यम वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। साथ ही उनके साहित्य में नैतिकता, मानवीय संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा परिवर्तन की चेतना निरन्तर विद्यमान रहती है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

3.4 हिन्दी साहित्य में योगदान

प्रेमचंद ने हिन्दी उपन्यास को नई दिशा और नई पहचान प्रदान की। उनसे पूर्व उपन्यासों में तिलिस्म, ऐयारी और मनोरंजन प्रधान प्रवृत्तियाँ अधिक दिखाई देती थीं, किन्तु प्रेमचंद ने उपन्यास को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ा। उन्होंने साहित्य को जनजीवन के निकट लाकर उसे सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनाया।

उनके प्रमुख उपन्यासकृसेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि तथा गोदानकृहिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर माने जाते हैं। इन रचनाओं के माध्यम से उन्होंने सामाजिक न्याय, वर्गीय असमानता, किसान जीवन, स्त्री प्रश्न तथा मानवीय मूल्यों को साहित्य के केन्द्र में स्थापित किया। उनके साहित्य का प्रभाव बाद के अनेक साहित्यकारों पर पड़ा और हिन्दी उपन्यास परम्परा को यथार्थवादी आधार प्राप्त हुआ।

प्रेमचंद का साहित्य आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है क्योंकि उसमें चित्रित सामाजिक समस्याएँ अनेक रूपों में वर्तमान समाज में भी विद्यमान हैं। यही कारण है कि उन्हें हिन्दी साहित्य का युगप्रवर्तक उपन्यासकार माना जाता है तथा उनके साहित्य का अध्ययन साहित्य, समाज और संस्कृति के समग्र विश्लेषण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

4. सामाजिक यथार्थ की अवधारणा

सामाजिक यथार्थ हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका संबंध समाज के वास्तविक जीवन, उसकी संरचना, समस्याओं तथा मानवीय संबंधों से है। साहित्यकार अपने समय के समाज का संवेदनशील पर्यवेक्षक होता है और अपने अनुभवों के आधार पर सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज की वास्तविक परिस्थितियों को बिना किसी कृत्रिम आदर्शवाद के अभिव्यक्त किया। उनके साहित्य में ग्रामीण जीवन, आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव, स्त्री उत्पीड़न तथा सामाजिक अन्याय का सजीव चित्रण मिलता है। इसी कारण उन्हें हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद का प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है।

4.1 सामाजिक यथार्थ का अर्थ एवं स्वरूप

सामाजिक यथार्थ का अर्थ समाज की वास्तविक परिस्थितियों, समस्याओं, संघर्षों तथा मानवीय जीवन की सच्चाइयों का निष्पक्ष चित्रण है। इसमें समाज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को समान रूप से प्रस्तुत किया जाता है। साहित्य में सामाजिक यथार्थ का उद्देश्य केवल घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि समाज की वास्तविक स्थिति का बोध कराना भी है।

4.2 सामाजिक यथार्थ के प्रमुख तत्त्व

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

सामाजिक यथार्थ के अंतर्गत आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता, जातिगत भेदभाव, स्त्री की स्थिति, शिक्षा, बेरोजगारी, शोषण, नैतिक मूल्य तथा मानवीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है। ये सभी तत्त्व समाज की वास्तविक संरचना को समझने में सहायता करते हैं और साहित्य को जीवन के निकट लाते हैं।

4.3 हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ

हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ की परंपरा ने समाज की वास्तविक समस्याओं को साहित्य का विषय बनाया। इस परंपरा को सुदृढ़ बनाने में प्रेमचंद का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से किसान, मजदूर, स्त्री तथा वंचित वर्ग के जीवन का अत्यंत स्वाभाविक और प्रभावशाली चित्रण किया।

4.4 प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी दृष्टि

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में समाज की समस्याओं को केवल चित्रित नहीं किया, बल्कि उनके कारणों और प्रभावों को भी स्पष्ट किया। उन्होंने जमींदारी शोषण, महाजनी व्यवस्था, गरीबी, सामाजिक असमानता तथा रूढ़ियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उनकी दृष्टि मानवीय संवेदना, समानता तथा सामाजिक न्याय पर आधारित थी।

4.5 सामाजिक यथार्थ की समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान समय में भी आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता, लैंगिक असमानता तथा वर्गीय विभाजन जैसी समस्याएँ विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं। ऐसे में प्रेमचंद के सामाजिक यथार्थ का अध्ययन आज भी अत्यन्त प्रासंगिक है। उनका साहित्य समाज को आत्ममंथन करने तथा समानता, न्याय और मानवीय मूल्यों की स्थापना की दिशा में प्रेरित करता है।

5. वर्ग चेतना की अवधारणा

वर्ग चेतना समाज के विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक वर्गों के अस्तित्व, अधिकारों, कर्तव्यों, हितों तथा संघर्षों के प्रति जागरूकता का बोध कराती है। प्रत्येक समाज में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार पर विभिन्न वर्गों का निर्माण होता है, जिनके मध्य सहयोग के साथ–साथ संघर्ष भी विद्यमान रहता है। साहित्य इन वर्गीय संबंधों तथा उनके प्रभावों को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में वर्ग चेतना को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, मानवीय समानता तथा नैतिक मूल्यों के संदर्भ में भी प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में शोषित वर्ग की पीड़ा, आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति जागरूकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

5.1 वर्ग चेतना का अर्थ एवं स्वरूप

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India
Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

वर्ग चेतना का अर्थ समाज के विभिन्न वर्गों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, उनके अधिकारों तथा उनके संघर्षों के प्रति जागरूकता से है। यह चेतना सामाजिक असमानताओं को समझने तथा न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की दिशा में प्रेरित करती है। साहित्य में वर्ग चेतना समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन और उनके पारस्परिक संबंधों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है।

5.2 प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज की वास्तविक परिस्थितियों का अत्यन्त प्रभावशाली चित्रण किया है। उन्होंने किसानों की निर्धनता, मजदूरों के शोषण, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, जातिगत भेदभाव तथा मध्यम वर्ग की समस्याओं को प्रमुखता दी। उनके उपन्यास यह स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक विषमता और आर्थिक असमानता समाज के विकास में प्रमुख बाधाएँ हैं। इसलिए उनका साहित्य केवल यथार्थ का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज को परिवर्तन की दिशा में भी प्रेरित करता है।

5.3 प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्ग चेतना

प्रेमचंद के उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक वर्गों के बीच विद्यमान संबंधों और संघर्षों का यथार्थ चित्रण मिलता है। किसान, जमींदार, महाजन, मजदूर तथा मध्यम वर्ग के पात्र अपने–अपने सामाजिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पात्र अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं, जिससे वर्ग चेतना का विकास स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। इस प्रकार प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना का संदेश देता है।

5.4 प्रमुख उपन्यासों का विश्लेषण

प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासकृगोदान, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला तथा सेवासदनकृभारतीय समाज के विविध वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। गोदान में कृषक जीवन की पीड़ा और आर्थिक शोषण, रंगभूमि में औद्योगिक विस्तार तथा सामाजिक संघर्ष, गबन में मध्यम वर्ग की नैतिक दुविधाएँ, कर्मभूमि में सामाजिक जागरण, निर्मला में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या तथा सेवासदन में स्त्री जीवन की सामाजिक विडम्बनाओं का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इन उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ और वर्ग चेतना को साहित्य का केन्द्र बनाया तथा सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित किया।

6. समकालीन प्रासंगिकता

प्रेमचंद का साहित्य केवल अपने समय तक सीमित नहीं है, बल्कि वर्तमान समाज के लिए भी समान रूप से प्रासंगिक है। उनके उपन्यासों में जिन सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक समस्याओं का चित्रण किया गया है, वे आज भी विभिन्न रूपों में समाज में विद्यमान हैं। आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता,

Cover Page

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

बेरोजगारी, स्त्री असमानता, ग्रामीण संकट, भ्रष्टाचार तथा वर्गीय विभाजन जैसी चुनौतियाँ आज भी सामाजिक विकास के मार्ग में बाधक हैं। ऐसे में प्रेमचंद का साहित्य समाज को आत्ममंथन करने तथा मानवीय मूल्यों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है।

6.1 वर्तमान सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज का समाज तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद सामाजिक असमानताओं से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाया है। ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच बढ़ती विषमता, निर्धनता तथा सामाजिक भेदभाव जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। प्रेमचंद ने जिन परिस्थितियों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया था, वे आज भी अनेक रूपों में समाज में दिखाई देती हैं, जिससे उनका साहित्य समकालीन समाज के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बन जाता है।

6.2 सामाजिक न्याय और समानता का संदेश

प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा मानवीय गरिमा की स्थापना पर बल देते हैं। उन्होंने शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्गों की समस्याओं को साहित्य के केन्द्र में रखकर समाज को समानता और संवेदनशीलता का संदेश दिया। उनका साहित्य यह प्रेरणा देता है कि किसी भी समाज का वास्तविक विकास तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान, न्याय और समान अवसर प्राप्त हों।

6.3 समकालीन साहित्य और समाज पर प्रभाव

प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा ने हिन्दी साहित्य की आगामी पीढ़ियों को गहराई से प्रभावित किया। अनेक साहित्यकारों ने सामाजिक यथार्थ, वर्गीय असमानता तथा जनजीवन की समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। आज भी साहित्य, शोध तथा सामाजिक विमर्श में प्रेमचंद के उपन्यासों का अध्ययन समाज की संरचना और परिवर्तन को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है।

6.4 वर्तमान अध्ययन के संदर्भ में महत्त्व

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ और वर्ग चेतना का अध्ययन वर्तमान समय में विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि इससे सामाजिक समस्याओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उनके निरन्तर बने रहने के कारणों को समझने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि प्रेमचंद का साहित्य केवल साहित्यिक धरोहर नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, मानवीय संवेदना और लोकतांत्रिक मूल्यों का भी सशक्त दस्तावेज है।

7. निष्कर्ष

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय समाज के सामाजिक यथार्थ एवं वर्ग चेतना के सशक्त दस्तावेज हैं। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, निम्न तथा मध्यम वर्ग के जीवन–संघर्षों, आर्थिक विषमता, सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव तथा शोषण की वास्तविक परिस्थितियों का अत्यन्त प्रभावशाली और यथार्थ चित्रण किया है। उनके उपन्यास केवल समाज की समस्याओं को उजागर नहीं करते, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता, मानवीय गरिमा तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना का संदेश भी देते हैं। गोदान, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला तथा सेवासदन जैसे उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने वर्गीय संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन तथा मानवीय संवेदना को साहित्य का केन्द्र बनाया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में भी आर्थिक असमानता, सामाजिक विषमता तथा वर्गीय विभाजन जैसी समस्याएँ विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं, इसलिए प्रेमचंद का साहित्य आज भी समान रूप से प्रासंगिक, प्रेरणादायी एवं समाजोपयोगी है। इस प्रकार सामाजिक यथार्थ और वर्ग चेतना की दृष्टि से प्रेमचंद का साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर होने के साथ–साथ भारतीय समाज को समझने और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2022); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:11, ISSUE:8(1), August: 2022
Online Copy of Article Publication Available (2022 Issues): www.ijmer.in
Digital Certificate of Publication: http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd August 2022
Publication Date:10th September 2022
Publisher: Sucharitha Publication, India

DOI: http://ijmer.in.doi./2022/11.08.20.2.3

संदर्भ

1. गोविंद, एन. (2020). सामाजिक यथार्थवाद और नैतिक प्रभावरू मुंशी प्रेमचंद की दुनिया। विश्व साहित्य का एक साथी, 1–10।
2. सिल्पा, सी. (2024)। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास प्रतिज्ञा में सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिंब। शोधकोशरू जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स Учредители रू ग्रंथालयाह प्रकाशन और प्रिंटर, 5(1)।
3. वर्मा, जी.एस. (2025)। प्रेमचंद का उपन्यासरू सामाजिक यथार्थ, शोषण का शास्त्र और लोकतंत्र का संकट। शोधसामाजिकरू जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, 2(2), 220–230।
4. गोयंका, के.के. (1980)। प्रेमचंद और गांधीवाद (प्रेमचंद और गांधीवाद)।
5. जाट, आर. (2020). प्रेमचंद के उपन्यासरू विविध आयाम (प्रेमचंद के उपन्यासरू विविध आयाम)।
6. शर्मा, एस.के., और पराग, के. (2025)। मानवतावाद और सामाजिक चेतना की पूछताछरू मुंशी प्रेमचंद के चुनिंदा उपन्यासों में नैतिकता, नैतिकता और यथार्थवाद। द वॉइस ऑफ क्रिएटिव रिसर्च, 7(4), 73–79।
7. वर्मा, जी.एस. (2025)। प्रेमचंद का उपन्यासरू सामाजिक यथार्थ, शोषण का शास्त्र और लोकतंत्र का संकट। शोधसामाजिकरू जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, 2(2), 220–230।
8. चौधुरीमयुम, एस. (2024)। मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास प्रतिज्ञा में सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिंब। शोधकोशरू जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5(1)।
9. शर्मा, एस.के., और पराग, के. (2025)। मानवतावाद और सामाजिक चेतना की पूछताछरू मुंशी प्रेमचंद के चुनिंदा उपन्यासों में नैतिकता, नैतिकता और यथार्थवाद। द वॉइस ऑफ क्रिएटिव रिसर्च, 7(4), 73–79।
10. गोविन्द, एन. (2020). सोशल रियलिज्म एंड मोरल अफेक्ट्सरू द वर्ल्ड्स ऑफ मुंशी प्रेमचंद। ए कम्पेनियन टू वर्ल्ड लिटरेचर, 1–10.
11. कुमार, ए. (2025). ट्रांजिशन्स फ्रॉम गांधीयन टू मार्क्सिस्ट पर्सपेक्टिव्स इन प्रेमचंद्स वर्क्स। इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 7(4).
12. कुमार, एल. (2019). कंटेंपरेरी इंडियन मिडिल–क्लास एंड द नॉवेल्स ऑफ प्रेमचंदरू ए ब्रीफ सर्वे। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी साइंसेज, 2(2).